DAILY NEWS BULLETIN

LEADING HEALTH, POPULATION AND FAMILY WELFARE STORIES OF THE DAY

Monday 20240205

जीवनशैली की बीमारियां

सिर्फ दवा ही नहीं, आहर-विहार में बदलाव से नियंत्रित होंगी जीवनशैली की बीमारियां; आयुष पर परिचर्चा में आए जरूरी सुझाव (Dainik Jagran: 20240205)

https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-ncr-national-health-fair-discussion-on-ayush-lifestyle-diseases-will-be-controlled-by-changes-in-diet-23644266.html

विशेषज्ञों ने चार दिवसीय राष्ट्रीय आरोग्य मेले के दूसरे दिन जीवनशैली से संबंधित रोगों के लिए आयुष विषय पर विस्तार से चर्चा हुई। इन बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए सिर्फ दवा काफी नहीं है। बल्कि लोगों को अपने आहार-विहार में भी बदलाव करना पड़ेगा। मोटापे की समस्या पता होने के बावजूद उसे कम करने के लिए ज्यादातर लोग इसे कम करने के लिए प्रयास नहीं करते।

सिर्फ दवा ही नहीं, आहर-विहार में बदलाव से नियंत्रित होंगी जीवनशैली की बीमारियां; आयुष पर परिचर्चा में आए जरूरी सुझाव

आहर-विहार में बदलाव से नियंत्रित होंगी जीवनशैली की बीमारियां
आहार अच्छा हो तो बीमारियां होगी ही नहीं
ठंड के मौसम में परेशानी बढ़ जाती है
राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली। मोटापा, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, दिल के रोग, कैंसर, तनाव, अवसाद इत्यादि जैसी जीवनशैली की बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। दुनिया भर में हर वर्ष चार करोड़ लोगों की इन बीमारियों के कारण मौत हो जाती है। भारत में भी संक्रामक बीमारियों की जगह जीवनशैली से जुड़ी गैर संचारी बीमारियां बड़ी समस्या बन चुकी हैं।

आयुष विषय पर विस्तार से हुई चर्चा
इन बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए सिर्फ दवा काफी नहीं है। बल्कि लोगों को अपने आहार-विहार में भी बदलाव करना पड़ेगा। तभी यह बीमारियां नियंत्रित होंगी। यह निचोड़ है, दैनिक जागरण समूह के श्री पूरन चन्द्र गुप्ता स्मारक ट्रस्ट और आयुष मंत्रालय के तत्वावधन में आयोजित चार दिवसीय राष्ट्रीय आरोग्य मेले के दूसरे दिन आयोजित परिचर्चा की। जिसमें विशेषज्ञों ने जीवनशैली से संबंधित रोगों के लिए आयुष विषय पर विस्तार से चर्चा हुई।

इस परिचर्चा का संचालन अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) की निदेशक डा. तनुजा नेसारी ने की। उन्होंने कहा कि पिछले पांच वर्ष में एआइआइए में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से पीड़ित पांच लाख से अधिक मरीजों को ठीक किया गया है, जिसमें डायबिटीज 51 हजार मरीज शामिल हैं। गठिया के मरीजों का भी सफल इलाज हुआ है।

मोटापा कम करने के लिए लगानी होगी दौड़
आयुष से सामान्य कोल्ड से लेकर ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, दिल की बीमारियों, कैंसर, कोरोना इत्यादि सभी बीमारियों का इलाज संभव है। आयुष पद्धति हमारी धरोहर है। मोटापे की कोई गोली नहीं है। मोटापा कम करने के लिए सुबह में दौड़ लगानी ही पड़ेगी। एनसीआईएसएम (भारतीय चिकित्सा प्रणाली के लिए राष्ट्रीय आयोग) के चेयरमैन वैद्य जयंत देव पुजारी ने कहा कि यदि हमें अपनी जीवनशैली की समस्या मालूम हो तो बहुत सारी बीमारियां दूर हो सकती हैं।

मोटापे की समस्या पता होने के बावजूद उसे कम करने के लिए ज्यादातर लोग इसे कम करने के लिए प्रयास नहीं करते। इसलिए प्रयास प्रारंभ करना सबसे महत्वपूर्ण है। स्कूली शिक्षा में आयुष को शामिल करने पर विचार चल रहा है। ताकि स्कूली बच्चे आयुष के फायदे से अवगत हो सकें और उसे अपना सकें। इसके अलावा आयुष की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए वर्ष 2030 को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में बदलाव किए गए हैं।

आयुष मंत्रालय की सलाहकार (होम्योपैथी) संगीता दुग्गल ने कहा कि होम्योपैथी में दिल की बीमारियों, हाइपरटेंशन, डायबिटीज, कैंसर सबका इलाज है। आयुष मंत्रालय और एम्स ने इंटिग्रेटिव मेडिसिन का विभाग शुरू करने के लिए समझौता किया है। इंटिग्रेटिव मेडिसिन समय की जरूरत है। खराब जीवनशैली के कारण गैर संचारी बीमारियां संक्रामक बीमारियों को पीछे छोड़ चुकी हैं।

जीवनशैली ठीक करना खुद की जिम्मेदारी
इसकी रोकथाम के लिए सिर्फ दवा काफी नहीं है। जीवनशैली का ध्यान रखना होगा। सरकार बीमार होने पर दवा दे सकती है, जीवनशैली ठीक करना खुद की जिम्मेदारी है। एआईआईए के डीन डॉ. महेश ब्यास ने कहा कि बीमार होने पर औषधि दी जाती है। यदि आहार अच्छा हो तो बीमारियां होगी ही नहीं। तीन नियम है। पहला आहार की मात्रा निर्धारित होनी चाहिए। दूसरा खाने का समय निर्धारित होना चाहिए। तीसरा आयुर्वेद में कहा गया है कि आहार ऐसा हो जिससे कोई परेशानी न हो। आयुर्वेद का पालन करने पर लोग निश्चित रूप से स्वस्थ रहेंगे।

एआईआईए के काय-चिकित्सा डॉ. रमाकांत यादव ने कहा कि जीवनशैली खराब है तो उसका असर एक दिन में नहीं दिखता। खराब जीवनशैली के कारण गठिया की बीमारी भी बढ़ रही है। जोड़ो की समस्या से पीड़ित 1500 रोगियों पर एक अध्ययन किया। जिसमें पाया गया कि गांवों भी गठित की बीमारी ज्यादा है। ठंड के मौसम में परेशानी बढ़ जाती है। उन्हें दवाएं दी गई। इसका लोगों के स्वास्थ्य पर बेहतर असर देखा गया है। लोगों में भी आयुष के प्रति भरोसा बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि लोगों को भी सूरज के साथ चलना चाहिए। सूर्योदय से पहले जगना चाहिए और संभव हो तो सूर्यास्त के बाद भोजन न करें। रात आठ बजे के बाद तो खाना बिल्कुल नहीं खाना चाहिए।

कैंसर

World Cancer Day 2024: डे टू डे की ऐसी आदतें, जो बना सकती हैं आपको कैंसर जैसी गंभीर बीमारी का शिकार (Dainik Jagran: 20240205)

https://www.jagran.com/lifestyle/health-daily-habits-that-increases-risk-of-cancer-23645150.html?cx_testId=2&cx_testVariant=cx_1&cx_artPos=0&cx_experienceId=EXVW3SL93TO3#cxrecs_s

Cancer एक गंभीर बीमारी है। इस बीमारी के प्रति जागरूकता बढ़ाने के मकसद हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि कुछ आदतें भी आपको कैंसर का शिकार बना सकती है इसलिए इनसे बचाव बहुत जरूरी है। आइए जान लेते हैं ऐसी ही कुछ आदतों के बारे में जिनसे दूर रहकर आप बचे रह सकते हैं इसके खतरे से।

कैंसर से बचने के लिए छोड़ दें ये आदतें
4 फरवरी को मनाया जाता है वर्ल्ड कैंसर डे।
कैंसर की रोकथाम, पहचान और उपचार को प्रोत्साहित करना है इस दिन को मनाने का मकसद।
धूम्रपान, केमिकल युक्त ब्यूटी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल और प्रोसेस्ड फूड्स बढ़ा सकते हैं कैंसर का खतरा।
लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली। कैंसर बहुत ही खतरनाक बीमारी है, इस बीमारी के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने और इसे रोकने के लिए लोगों को प्रेरित करने के मकसद से हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। सबसे पहले विश्व कैंसर दिवस साल 1993 में जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में यूनियन फॉर इंटरनेशनल कैंसर कंट्रोल के द्वारा मनाया गया था। पुरुषों में जहां फेफड़े, तो वहीं महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के मामले सबसे ज्यादा देखने को मिल रहे हैं।

कैंसर बीमारी की पता लगते ही लोगों के दिमाग में सबसे पहला सवाल आता है कि आखिर कैसे? खासतौर से उन लोगों के लिए ये वाकई गंभीर चिंता का विषय बन जाता है, जो अच्छा खाते हैं और हेल्दी लाइफस्टाइल फॉलो करते हैं, तो अगर आप नहीं होना चाहते हैं इसका शिकार, तो आज और अभी से छोड़ दें ये आदतें।

गतिहीन जीवनशैली
बॉडी को फिट रखने के लिए उसे एक्टिव रखना जरूरी है। एक्टिव लाइफस्टाइल अपनाकर आप कई बीमारियों का खतरा टाल सकते हैं। सिडेंट्री लाइफस्टाइल यानी गतिहीन जीवनशैली आपको मोटापे का शिकार बना सकती है। जिससे हॉर्मोन डिस्बैलेंस हो सकता है। कैंसर रोग एक्सपर्ट के अनुसार महिलाओं में मोटापा व हार्मोनल असंतुलन के कारण स्तन कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। पहले जहां 45 साल की उम्र के बाद महिलाओं में स्तन कैंसर होता था, वहीं अब 35 साल से कम उम्र की महिलाओं को भी स्तर कैंसर की समस्या हो रही है।

खाने को बार-बार गर्म करना
बचे हुए खाने को ज्यादातर लोग फ्रिज में रख देते हैं और अगले दिन उसे माइक्रोवेव में गर्म कर खा लेते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं इतने हाई टेंपरेचर पर खाना गर्म करने से उसके पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मतलब सब्जी, दाल के रूप में भी आप जंक फूड ही खा रहे होते हैं, तो अगर आप कैंसर से बचे रहना चाहते हैं, तो ताजा भोजन करें।

पैक्ड फूड्स खाना

प्रोसेस्ड, बहुत ज्यादा नमक और हाई फ्लेम पर पकाए गए फूड्स सेहत के लिए बहुत ही नुकसानदेह होते हैं, जो हमारे शरीर में पहुंचकर कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी की वजह बन सकते हैं। प्रीजर्वेटिव फूड आइटम्स के साथ भी ये प्रॉब्लम होती है, तो ऐसे फूड आइटम्स से जितना हो सके दूर रहें।

ब्यूटी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल
खूबसूरत और जवां नजर आने के लिए हम बिना फायदा-नुकसान जानें ब्यूटी प्रोडक्ट्स का धड़ल्ले से इस्तेमाल करते हैं, लेकिन आपको बता दें कई सारे ब्यूटी प्रोडक्ट्स स्किन कैंसर की वजह बन सकते हैं। बालों को सिल्की एंड शाइनी बनाने वाले प्रोडक्ट्स में फॉर्मेल्डिहाइड और फॉर्मेल्डिहाइड-रिलीजिंग जैसे केमिकल्स का इस्तेमाल किया जाता है, जो बेहद खतरनाक केमिकल्स हैं।

इसके अलावा नेल पॉलिश और नेल पेंट रिमूवर में टोल्यूनि, फॉर्मेल्डिहाइड और एसीटोन जैसे केमिकल्स होते हैं, जो बहुत विषाक्त होते हैं और ये कैंसर के खतरे को बढ़ाने का काम करते हैं।

मंकी फीवर
कर्नाटक में बढ़ रहे हैं मंकी फीवर के मामले, जानिए क्या है ये बीमारी, कैसे करें बचाव?

https://www.amarujala.com/photo-gallery/lifestyle/fitness/monkey-fever-kyasanur-forest-disease-in-india-know-its-symptoms-and-treatment-in-hindi-2024-02-04

कोरोना के नए वैरिएंट्स से संक्रमण के जोखिमों के बीच देश के कई राज्यों में इन दिनों मंकी फीवर के मामलों के बढ़ने की भी खबर है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया, पिछले 15 दिनों में कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले में इस संक्रामक रोग के मामले तेजी से बढ़े हैं। 31 संक्रमितों में से 12 मरीज अस्पतालों में भर्ती हैं जबकि बाकी का इलाज घर पर ही किया जा रहा है। सभी की हालत स्थिर है और अब तक कोई गंभीर मामला सामने नहीं आया है। मंकी फीवर का पहला मामला 16 जनवरी को सामने आया था।

मंकीफीवर को क्यासानूर फॉरेस्ट डिजीज ((केएफडी) के नाम से भी जाना जाता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने बताया, जानवरों से इंसानों में इस रोग के प्रसार का खतरा हो सकता है। बंदरों के शरीर में पाए जाने वाले टिक्स (किलनी) के काटने से इसके इंसानों में फैलने का खतरा रहता है। भारत के कुछ हिस्सों, विशेष रूप से कर्नाटक, महाराष्ट्र और गोवा में इस रोग के मामले सबसे ज्यादा रिपोर्ट किए जाते रहे हैं।

मंकी फीवर का खतरा
क्यासानूर फॉरेस्ट डिजीज के बारे में जानिए

केएफडी या मंकी फीवर, मनुष्यों के लिए घातक भी हो सकती है। समय के साथ इसके लक्षणों के बिगड़ने का खतरा हो सकता है, जिसको लेकर सभी लोगों को सावधानी बरतते रहने की सलाह दी जाती है। इस संक्रामक रोग के कारण अचानक बुखार आने, गंभीर सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और थकान जैसे लक्षणों का खतरा हो सकता है।

बीमारी बढ़ने के साथ उल्टी और दस्त जैसे गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल लक्षणों का भी खतरा हो सकता है।
विज्ञापन

मंकी फीवर के गंभीर लक्षण
गंभीर भी हो सकते हैं इसके लक्षण

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, मंकी फीवर के गंभीर मामलों में, नाक से खून आने और मसूड़ों से रक्तस्राव जैसी रक्तस्रावी समस्याओं का भी जोखिम हो सकता है। कुछ लोगों में कंपकंपी, चलने में असामान्यताएं और मानसिक भ्रम जैसी न्यूरोलॉजिकल जटिलताएं उन्नत हो सकती हैं। मंकी फीवर की समस्या में त्वरित उपचार और लक्षणों का शीघ्र पता लगाना महत्वपूर्ण है।

संक्रमितों का इलाज
मंकी फीवर का इलाज और बचाव

मेडिकल रिपोर्ट्स से पता चलता है कि केएफडी के लिए कोई विशिष्ट उपचार नहीं है, लेकिन लक्षणों का पता लगाकर संबंधित समस्याओं के जोखिमों को कम करने के लिए प्रारंभिक उपचार दिए जाते हैं। रक्तस्रावी विकार के लक्षण वाले रोगियों को अस्पाताल में भर्ती होने और खूब पानी पीते रहने की सलाह दी जाती है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, सभी लोगों के लिए मंकी फीवर से बचाव करते रहना जरूरी है। केएफडी के लिए टीके मौजूद हैं, इससे संक्रमण से बचाव और बीमारी के गंभीर रूप लेने का खतरा कम हो सकता है। अगर आप प्रभावित इलाकों में रहते हैं तो टिक्स के काटने से बचने के लिए सुरक्षात्मक कपड़े पहनना सुरक्षित तरीका हो सकता है।

ब्रेन कैंसर

बड़ी कामयाबी- दुनिया का पहला ब्लड टेस्ट जिससे कैंसर का हो सकेगा शीघ्र निदान (Amar Ujala: 20240205)

https://www.amarujala.com/photo-gallery/lifestyle/fitness/world-cancer-day-2024-trinetra-glio-blood-test-to-diagnose-brain-tumours-and-cancer-2024-01-27

कैंसर, वैश्विक स्तर पर मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है, हर साल तमाम प्रकार के कैंसर के कारण लाखों लोगों की मौत हो जाती है। रिपोर्ट्स से पता चलता है कि दुनियाभर में पिछले एक दशक में ब्रेन कैंसर के मामलों में तेजी से वृद्धि आई है। मस्तिष्क में कैंसरयुक्त असामान्य कोशिकाओं की वृद्धि ट्यूमर का कारण बनती है जिससे ब्रेन कैंसर का खतरा हो सकता है। यह सबसे जानलेवा प्रकार के कैंसर में से एक है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, कैंसर के कारण मृत्युदर अधिक होने का प्रमुख कारण समय पर इस रोग का निदान न हो पाना है। ज्यादातर लोगों में कैंसर का पता ही तब चल पाता है जब वह काफी बढ़ चुका होता है। दुनियाभर में बढ़ते कैंसर के जोखिमों को लेकर लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से हर साल चार फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है।

ब्रेन कैंसर के शीघ्र निदान के उपायों की खोज कर रही वैज्ञानिकों की टीम को बड़ी सफलता मिली है। सर्जनों और वैज्ञानिकों ने ब्रेन कैंसर के लिए दुनिया का पहला रक्त परीक्षण विकसित किया है जिसकी मदद से समय रहते कैंसर का पता लगाया जा सकेगा। समय रहते उपचार मिलने से रोगियों के जीवित रहने की दर को बढ़ाने में भी मदद मिल सकती है।

ब्रेन ट्यूमर का खतरा
ब्रेन ट्यूमर का पता लगाने के लिए ब्लड टेस्ट

वर्षों से, ब्रेन ट्यूमर का पता लगाना काफी कठिन प्रक्रिया रही है। हर साल दुनियाभर में हजारों लोगों को ये कैंसर प्रभावित करता है। अब इस कैंसर का पता लगाने के लिए शोधकर्ताओं ने एक विशेष प्रकार का रक्त परीक्षण डिजाइन किया है जो अधिक तेजी से बीमारी का निदान करने में मदद कर सकती है।

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कैंसर में प्रकाशित अध्ययन की रिपोर्ट में कहा गया है कि यह परीक्षण "दुर्गम" मस्तिष्क ट्यूमर वाले रोगियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकती है, जिन्हें जल्द से जल्द इलाज शुरू करने से लाभ हो सकता है।

ब्रेन ट्यूमर की समस्या का निदान
कई प्रकार के ब्रेन ट्यूमर का हो सकेगा निदान

इंपीरियल कॉलेज लंदन और इंपीरियल कॉलेज हेल्थकेयर एनएचएस ट्रस्ट द्वारा संचालित ब्रेन ट्यूमर रिसर्च सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के शोधकर्ताओं ने पाया कि इस टेस्ट से ग्लियोब्लास्टोमा (जीबीएम) सहित ब्रेन ट्यूमर के अन्य कई प्रकारों का आसानी से पता लगाया जा सकता है। जीबीएम मस्तिष्क का सबसे आम प्रकार का कैंसर है, वयस्कों में इसका खतरा अधिक देखा जाता रहा है।

रक्त की जांच
कैसे काम करता है ये टेस्ट

वैज्ञानिक इस परीक्षण का वृहद स्तर पर अध्ययन कर रहे हैं और यदि ये सफल रहा तो रोगियों को दो वर्षों में इस नए परीक्षण का लाभ मिल सकता है।

ट्राइनेट्रा-ग्लियो नामक ये ब्लड टेस्ट, ग्लियाल कोशिकाओं की पहचान करने में मददगार है। ये कोशिकाएं ब्रेन ट्यूमर से निकली होती हैं और रक्त में तैरती रहती है। रक्त में इन कोशिकाओं की माइक्रोस्कोप से पहचान की जा सकती है। इसका पाया जाना ये संकेत हो सकता है कि ब्रेन में ट्यूमर का विकास हो रहा है।

युवाओं में बढ़ रही है ब्रेन ट्यूमर की समस्या - फोटो : Pixabay
क्या कहते हैं शोधकर्ता?

ब्रेन ट्यूमर रिसर्च सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का नेतृत्व करने वाली डॉ. नेलोफर सैयद कहती हैं, ब्रेन ट्यूमर का शीघ्र पता लगाने के लिए ये सस्ती विधि है जो रोगी के देखभाल में महत्वपूर्ण हो सकती है। अभी भी हमारे लिए कुछ रास्ता तय करना बाकी है, लेकिन यह उन लोगों के लिए काफी मददगार है जो ट्यूमर के स्थान या अन्य बाधाओं के कारण ब्रेन बायोप्सी नहीं करा सकते हैं।

शोधकर्ता कहते हैं, ब्रिटेन में किसी भी अन्य कैंसर की तुलना में ब्रेन ट्यूमर से 40 वर्ष से कम उम्र के अधिक लोगों की मौत होती है। अगर हम रोगियों में कैंसर का समय रहते पता लगा लेते हैं तो ये उनकी जान बचाने में काफी मददगार हो सकता है।

फेफड़ों के कैंसर

फेफड़ों के कैंसर-मौत के 80% मामलों के लिए ये है मुख्य वजह, आपकी भी तो नहीं है ऐसी आदत? (Amar Ujala: 20240205)

https://www.amarujala.com/photo-gallery/lifestyle/fitness/world-cancer-day-2024-smoking-causes-lung-cancer-in-young-adults-in-hindi-2024-02-04?pageId=5

कैंसर जानलेवा रोगों में से एक है, किसी भी उम्र के व्यक्ति में कैंसर का खतरा हो सकता है। खराब लाइफस्टाइल, रसायनों के अधिक संपर्क और खान-पान की गड़बड़ आदतों के कारण इसका जोखिम और भी तेजी से बढ़ता हुआ देखा गया है। जिन कैंसर के कारण पिछले एक दशक में सबसे ज्यादा मौत के मामले दर्ज किए गए हैं, फेफड़ों का कैंसर उनमें से एक है। युवा आबादी में इस प्रकार के कैंसर का खतरा अधिक देखा जा रहा है।

वैश्विक स्तर पर बढ़ते कैंसर के जोखिमों को लेकर लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से हर साल चार फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। विश्व कैंसर दिवस का इस साल का थीम है "क्लोज द केयर गैप" है।

फेफड़ों का कैंसर पुरुषों-महिलाओं दोनों में कैंसर से होने वाली मौतों का शीर्ष कारण है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने पाया कि हमारे लाइफस्टाइल की कुछ आदतें इसके जोखिमों को बढ़ा रही हैं, धूम्रपान उनमें सबसे प्रमुख है।

धूम्रपान की आदत नुकसानदायक
धूम्रपान से फेफड़ों के कैंसर का खतरा

सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) विशेषज्ञ कहते हैं, फेफड़ों के कैंसर के लिए सिगरेट (धूम्रपान) प्रमुख जोखिम कारक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, फेफड़ों के कैंसर से होने वाली लगभग 80-90% मौतों के लिए सिगरेट मुख्य कारण है।

तम्बाकू के धुआं में 7,000 से अधिक रसायनों का जहरीला मिश्रण होता है, जिससे न केवल फेफड़ों के क्षति पहुंचती है, साथ ही ये हृदय, मस्तिष्क, तंत्रिकाओं से संबंधित गंभीर बीमारियों के खतरे को बढ़ाने वाली आदत भी हो सकती है। लंग्स कैंसर से बचने के लिए सिगरेट से बिल्कुल दूरी बनाना जरूरी है।

धूम्रपान से होने वाली दिक्कतें
धूम्रपान से कैंसर कैसे होता है?

कैंसर रिसर्च यूके की रिपोर्ट कहती है धूम्रपान कई प्रकार से कैंसर का कारण बनती है। यह सबसे पहले हमारी कोशिकाओं में डीएनए को नुकसान पहुंचाना शुरू करती है। डीएनए ही हमारी कोशिकाओं के विकास और कार्यों को नियंत्रित करता है। डीएनए में होने वाली क्षति के कारण कोशिकाएं असामान्य तरीके से परिवर्तित होने लगती हैं, और समय के साथ डीएनए क्षति के बढ़ने से कैंसर हो सकता है।

अध्ययनकर्ता बताते हैं, धूम्रपान को कभी भी छोड़ देना लाभकारी है। ये शरीर के लिए साइलेंट जहर जैसा हानिकारक माना जाता है।

धूमपान से फेफड़ों के क्षति का खतरा
सेकेंडहैंड स्मोकिंग भी खतरनाक

सीडीसी विशेषज्ञों का कहना है, भले ही आप धूम्रपान नहीं करते हैं पर अगर ऐसे लोगों के सपर्क में रहते हैं जिनको धूम्रपान की आदत है तो भी आप कैंसर के शिकार हो सकते हैं। सेकेंडहैंड स्मोकिंग के कारण सिगरेट न पीने वालों में भी इस कैंसर का जोखिम हो सकता है। सेकेंडहैंड स्मोकिंग का मतलब तंबाकू उत्पादों को जलाने से निकलने वाले धुएं में सांस लेने से है।

सेकेंडहैंड स्मोकिंग भी फेफड़ों के कैंसर का खतरा 20-30% तक बढ़ा सकती है। धूम्रपान न करने वाले अमेरिकी वयस्कों में हर साल सेकेंडहैंड स्मोकिंग के कारण फेफड़ों के कैंसर से 7,300 से अधिक मौतें होती हैं।

तंबाकू उत्पाद से होने वाली दिक्कतें
क्या कहते हैं विशेषज्ञ?

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, सिगरेट या कोई भी तंबाकू उत्पाद हमारे शरीर के लिए जहर जैसा है, इससे दूरी बनाना जरूरी है। अगर आप सिगरेट पीते हैं तो इसे अभी से छोड़ने का निर्णय लें।

कैंसर रिसर्च यूके के विशेषज्ञ कहते हैं यहां तक कि दिन में एक सिगरेट पीने से भी शरीर को गंभीर क्षति होने का खतरा हो सकता है। फेफड़ों के कैंसर से बचने के लिए लाइफस्टाइल और आहार को ठीक रखने और समय-समय पर डॉक्टरी सलाह लेते रहना भी जरूरी है।

दोस्तों के कारण भी आप हो सकते हैं लंग्स कैंसर के शिकार, 50-60% मामलों के लिए यही प्रमुख वजह (Amar Ujala: 20240205)

https://www.amarujala.com/photo-gallery/lifestyle/fitness/lung-cancer-among-people-who-never-smoked-know-its-causes-and-precaution-tips-2024-01-21

फेफड़ों के कैंसर, दुनियाभर में तेजी से बढ़ते कैंसर के मामलों में से एक हैं। अध्ययनों में पाया गया है कि इस प्रकार के कैंसर का सबसे ज्यादा जोखिम उन लोगों में होता है जो धूम्रपान करते हैं। पर हालिया रिपोर्ट्स काफी चिंता बढ़ाने वाली हैं। इसमें कहा गया है कि नॉन स्मोकर्स यानी जिन लोगों ने कभी धूम्रपान नहीं किया है उनमें भी यह जोखिम तेजी से बढ़ रहा है।

इतना ही नहीं 50-60 फीसदी लंग्स कैंसर के मामले नॉन स्मोकर्स में रिपोर्ट किए जा रहे हैं। डॉक्टर्स ने चिंता जताते हुए सभी लोगों को सावधानी बरतने की सलाह दी है, लंग्स कैंसर हर साल लाखों लोगों की मौत का कारण बनता है।

फेफड़ों के कैंसर को आमतौर पर दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है- नॉन स्मॉल सेल कार्सिनोमा (एनएससीएलसी) और स्मॉल सेल कार्सिनोमा (एससीएलसी)। डॉक्टर कहते हैं, एनएससीएलसी का जोखिम अधिक देखा जा रहा है। अगर आप धूम्रपान नहीं भी करते हैं तो भी आपको कैंसर के इस जोखिम से पूरी तरह सुरक्षित नहीं माना जा सकता है। आइए जानते हैं कि कौन से कारण नॉन स्मोकर्स में इसका खतरा बढ़ा रहे हैं?

फेफड़ों की समस्या
लंग्स कैंसर के जोखिम

यूएस सीडीसी की रिपोर्ट के अनुसार, 50% से अधिक फेफड़ों का कैंसर उन लोगों में देखा जा रहा है जिन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया है, क्योंकि एडेनोकार्सिनोमा या कैंसर उन कोशिकाओं में शुरू होता है जो फेफड़ों की छोटी वायु थैलियों को घेरती हैं और बलगम जैसे पदार्थ बनाती हैं। धूम्रपान न करने वालों में फेफड़ों के कैंसर के लगभग 20% मामले अंदरूनी हिस्से की परत में देखे जा रहे हैं।

इसके कारणों को समझने के लिए किए गए अध्ययन में पाया गया है कि कुछ स्थितियां इस जोखिम को बढ़ा रही हैं, जिनको लेकर सभी लोगों को अलर्ट रहने की आवश्यकता है।

धूम्रपान के कारण होने वाली समस्या
सेकेंड-हैंड स्मोकिंग सबसे बड़ा खतरा

सेकेंडहैंड स्मोकिंग उन लोगों में फेफड़ों के कैंसर के सबसे बड़े जोखिम कारकों में से एक है, जिन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया। अमेरिकन कैंसर सोसायटी की एक रिपोर्ट में पाया गया है कि लगभग 7,000 वयस्क सेकेंडहैंड स्मोकिंग के कारण फेफड़ों के कैंसर से मारे जाते हैं।

सेकेंडहैंड स्मोकिंग का मतलब तंबाकू उत्पादों को जलाने से निकलने वाले धुएं में सांस लेने से है। मतलब अगर आपके साथी धूम्रपान करते हैं और उससे निकलने वाले धुएं में आप सांस ले रहे हैं तो इसके कारण भी आपमें कैंसर का खतरा हो सकता है।

रसायनों के कारण लंग्स कैंसर का जोखिम
हानिकारक रसायनों का संपर्क

कई लोगों को अपने काम करने वाली जगहों पर मौजूद कैंसर पैदा करने वाले एजेंटों के कारण भी फेफड़ों के कैंसर का शिकार पाया जा रहा है, भले ही वे धूम्रपान नहीं कर रहे हों। जो लोग ऐसे स्थानों पर काम करते हैं जहां आर्सेनिक, यूरेनियम, एस्बेस्टस और डीजल का धुआं होता है, उनमें फेफड़ों के कैंसर होने का खतरा अधिक होता है। इस तरह के धुएं में सांस लेने से हानिकारक तत्व फेफड़ों में चले जाते हैं जिससे भी कैंसर विकसित हो सकता है।

लंग्स कैंसर का जोखिम
फेफड़ों के कैंसर की फैमिली हिस्ट्री

कई अध्ययनों से पता चला है कि फेफड़ों के कैंसर की फैमिली हिस्ट्री वाले लोगों को भी इस कैंसर का खतरा हो सकता है, भले ही वो धूम्रपान न करते हों। डॉक्टर कहते हैं, यदि आपके परिवार के किसी सदस्य को फेफड़ों का कैंसर रहा हो, तो आपमें भी इसकी आशंका दोगुनी जाती है।

ऐसे लोग जिनके दो या अधिक प्रथम-डिग्री के रिश्तेदार (भाई, बहन, माता-पिता या बच्चे) को फेफड़े का कैंसर हुआ है, उनमें फेफड़े का कैंसर होने की आशंका और भी अधिक होती है। इस तरह के जोखिम वालों को नियमित रूप से डॉक्टर से मिलकर जांच, सलाह लेना आवश्यक हो जाता है।

Kidney stones

Kidney stone risk is lowered by a class of diabetes medications: Study (Hindustan Times: 20240205)

https://www.hindustantimes.com/lifestyle/health/kidney-stone-risk-is-lowered-by-a-class-of-diabetes-medications-study-101707042989830.html

The study shows that 'sodium-glucose contratransporter 2 (SGLT2) inhibitors can reduce the risk of acquiring kidney stones.
Kidney stones are becoming increasingly common around the world. Type 2 diabetes is related to an increased risk of kidney stones; however, various forms of treatment for this condition may potentially reduce the risk of kidney stones.

Researchers at Mass General Brigham discovered that using sodium-glucose contratransporter 2 (SGLT2) inhibitors was associated with a decreased chance of acquiring kidney stones.

The findings were published in JAMA Internal Medicine.

The study included data from three nationwide databases of patients with type 2 diabetes who were seen in routine clinical practice. The team analyzed information from 716,406 adults with type 2 diabetes who had started taking an SGLT2 inhibitor or two other classes of diabetes medications known as GLP1 receptor agonists or dipeptidyl peptidase 4 (DPP4) inhibitors.

Patients who began taking SGLT2 inhibitors had a 30 per cent lower risk of developing kidney stones than those taking GLP1 agonists and about a 25 per cent lower risk than those taking DPP4 inhibitors.

The findings were consistent across sex, race/ethnicity, history of chronic kidney disease and obesity.

"Our findings could help inform clinical decision-making for patients with diabetes who are at risk for developing kidney stones," said corresponding author Julie Paik, MD, ScD, MPH, of the Division of Pharmacoepidemiology and Pharmacoeconomics and the Division of Renal (Kidney) Medicine at Brigham and Women's Hospital.

Gender Disparity

Brain changes that cause pain sensitivity impact older women more: Study (Hindustan Times: 20240205)

https://www.hindustantimes.com/lifestyle/health/brain-changes-that-cause-pain-sensitivity-impact-older-women-more-study-101707042946714.html#google_vignette

The study shows gender disparities in pain perception can be linked to the brain network. The gender differences become more prominent with age.

According to a new study, as we age, the brain mechanism that allows us to block pain changes. Also, gender differences in these changes may cause females to be more sensitive to mild pain than males when they are older.

Researchers used fMRI images to examine brain reactions in men and women who rated the severity and unpleasantness of pain while being exposed to increasing quantities of heat.

The findings revealed that long-standing gender disparities in pain perception might be linked back to this brain network, and they provided additional evidence that those gender differences may become more pronounced as people age.

The study was published recently in The Journal of Pain. "The most novel part of this study is looking at gender by age," said lead study author Michelle Failla, assistant professor in the College of Nursing at The Ohio State University. "Most of the work characterizing which regions in the brain respond to pain have been done in people aged 18 to 40. We want to understand what's happening between the ages of 30 and 90 years old because that's when people are beginning to experience chronic pain."

Plenty of previous research has shown that females are more sensitive to pain than males, but the brain regions and functions behind the gender differences in pain perception have mostly remained a mystery. And in later adulthood, when risk for chronic pain is higher and our tolerance for pain drops, even less about the brain's role in pain perception is known.

In this study, the researchers specified that they holistically examined gender-based differences that may relate not just to biological sex, but also to social factors that influence how people respond to pain.

The imaging component of the study zeroed in on the descending pain modulatory system (DPMS), a hub of brain regions that communicate with each other to engage signal transmission - including activation of opioid receptors - that enables us to reduce our own pain.

The study sample included 27 females and 32 males between ages 30 and 86 who were asked to report when applied heat reached levels of just-noticeable, weak and moderate pain and to rate how unpleasant each level felt. Researchers used the fMRI imaging to observe DPMS activity that corresponded with each participant's individual pain response.

"There are different brain regions involved in those distinctions between perception of pain intensity and unpleasantness, so we thought it was important to look at both and see how those

brain regions are recruited during pain," said Failla, also an investigator in the Center for Healthy Aging, Self-Management and Complex Care in Ohio State's College of Nursing.

Results showed that a few regions within the brain's pain modulatory system did indicate a gender-by-age difference: At the moderate pain level, men showed an increased DPMS response with older age, while as women aged, the DPMS response decreased. A decreased response in the brain is presumed to translate into a lower ability to harness our own physiological functions to reduce our pain.

Presumed is a key word: While the DPMS is believed to have a significant role in pain sensitivity and tolerance, researchers are still working toward describing exactly how it works and how an intact versus dysfunctional system shows up in scans."We don't know exactly what is an optimum DPMS response," Failla said. "Are we seeing it activated to catch up with your pain, or is it already working, meaning the pain could have been worse?"

The researchers are continuing this work, which includes investigating brain activity in people who may have a difficult time articulating the pain that they're feeling - such as people with dementia or autism.The more scientists can learn about the brain's role in pain perception, the better the chances are for more effective pain management, Failla said.

"Pain is such an individual experience. In science we're moving toward individual factors that can influence pain specifically and what makes it different for each person," she said. “This could then identify a mechanism we can target, or even just give us a better understanding that there are different levels of innate abilities to modulate pain.”

Candida auris

Candida auris: Symptoms to prevention, all about the deadly fungal infection spreading in US (Hindustan Times: 20240205)

https://www.hindustantimes.com/lifestyle/health/candida-auris-symptoms-to-prevention-all-about-the-deadly-fungal-infection-spreading-in-us-101707045457078.html

Candida auris is known to cause outbreaks in healthcare facilities and patients who spend a long time in hospitals are at risk. All you want to know.
The outbreak of a rare fungal infection Candida auris has sparked concerns in United States. Most recently, four people in Washington have been tested positive for the deadly infection, however no deaths have been reported so far since detection of the first case in July. Candida auris is known to cause outbreaks in healthcare facilities and patients who spend a long time in hospitals are at risk. The fact that C. auris infections are resistant to three primary categories of antifungal medications and may not show symptoms even after spreading throughout the body adds to the trouble in treating them. While the infection isn't very common, it can cause severe disease with high mortality rate, is resistant to drugs and has spreads very fast. (Also

read | Washington state sees outbreak of deadly Candida auris infection; know symptoms and ways to prevent it)

What is Candida auris?
Candida auris was first identified in the year 2009 in Japan in a patient's ear secretion. The infection can stay on surfaces for at least two weeks as per study, whereas Covid can only survive for three days.

Discover the thrill of cricket like never before, exclusively on HT. Explore now!
"Candida auris is a type of yeast that can cause serious infections, particularly in hospital settings. It's concerning because it's often resistant to multiple antifungal medications, making it difficult to treat. Symptoms of Candida auris infection can include fever, chills, and body aches. Treatment usually involves antifungal medications, but because of its resistance profile, treatment options can be limited. Management strategies focus on infection control measures in healthcare settings to prevent its spread. It's important to closely follow updates from health authorities for the latest information and guidance regarding outbreaks," says Dr Aditya S Chowti, Senior consultant, Internal Medicine, Fortis Hospital, Cunningham Road, Bengaluru.

"Candida auris is a formidable fungal pathogen causing outbreaks, particularly in healthcare facilities. It poses a significant threat due to its resistance to multiple antifungal drugs, rendering treatment challenging. Its ability to persist on surfaces and spread between patients makes containment efforts complex," says Dr Darshana Reddy, MBBS, MD, DNB Internal Medicine, Senior Consultant, Internal Medicine, Altius hospital, HBR layout.

Symptoms of Candida auris
The fungus can infect an open wound or lungs or can enter though bloodstream. It has a wide range of symptoms.

"The infection manifests with symptoms such as fever, chills, and body aches, which can escalate rapidly, especially in immunocompromised individuals. Its elusive nature often delays diagnosis, allowing it to spread stealthily within healthcare environments," as per Dr Reddy.

How to treat Candida auris
"Treatment primarily revolves around antifungal medications, yet the limited efficacy of conventional drugs against Candida auris strains underscores the urgency for novel treatment approaches. Moreover, the potential for resistance development further complicates therapeutic interventions. In this situation, multiple antifungals at high doses may be required to treat the infection," says Dr Reddy.

How to manage the infection
Management strategies emphasize stringent infection control measures within healthcare settings. These encompass enhanced cleaning protocols, strict adherence to hand hygiene, patient isolation, and surveillance to promptly identify and contain outbreaks, says Dr Reddy.

Fertility Preservation
Fertility Preservation: Methods and Indications for Securing Reproductive Options (The Hindu: 20240205)

https://www.thehindu.com/brandhub/fertility-preservation-methods-and-indications-for-securing-reproductive-options/article67795989.ece?cx_testId=16&cx_testVariant=cx_1&cx_artPos=0&cx_experienceId=EXKY23I917G6#cxrecs_s

In the realm of reproductive health, fertility preservation stands as a crucial aspect, offering individuals the opportunity to safeguard their ability to have biological children in the future. This proactive approach encompasses various methods tailored to diverse circumstances and needs, providing a ray of hope for those facing infertility, medical treatments, or other conditions that might impact their fertility.

Exploring Fertility Preservation
Methods
Egg Freezing (Oocyte Cryopreservation)

Egg freezing allows women to preserve their eggs at a younger age for future use. This method is ideal for those aiming to delay childbearing due to career aspirations, personal goals, or medical treatments that may affect fertility.

Sperm Freezing (Sperm Cryopreservation)

Men can freeze and store their sperm, offering options for those undergoing medical treatments impacting sperm quality or individuals with occupations posing risks to fertility.

Embryo Cryopreservation

Couples undergoing in vitro fertilization (IVF) can freeze and store excess embryos for future use. This technique not only assists with fertility treatment but also offers options for future pregnancies without additional procedures.

Ovarian Tissue Freezing

This method involves surgically removing and freezing ovarian tissue containing immature eggs. It's suitable for women unable to undergo standard ovarian stimulation for egg retrieval or those at risk of premature ovarian failure.

Indications for Fertility Preservation
Medical Treatments and Oncofertility

Individuals facing cancer treatments that might impair fertility often opt for fertility preservation methods before initiating chemotherapy or radiation-a field known as oncofertility.

Delayed Family Planning

For those choosing to delay starting a family due to career aspirations, educational pursuits, or personal goals, fertility preservation methods offer the chance to secure their reproductive potential.

Autoimmune Disorders and Hormonal
Treatments
Certain medical treatments for autoimmune disorders or hormonal therapies may impact fertility. Fertility preservation provides options for individuals undergoing such treatments.

Genetic Conditions and Familial Risks

Individuals with genetic conditions or a family history of early menopause might opt for fertility preservation at a younger age to mitigate potential risks to fertility.

Gender-Affirming Care

Transgender individuals undergoing hormone therapy or surgeries as part of their gender affirmation journey may opt for fertility preservation before transitioning.

To conclude, fertility preservation methods offer a spectrum of options for individuals facing various medical conditions, treatments, or personal circumstances that might affect their ability to conceive. These techniques empower individuals to make informed decisions about securing their reproductive potential, ensuring that the dream of parenthood remains within reach, irrespective of life circumstances or challenges to fertility.

Colon cancer

New colon cancer biomarker could improve screening, slow disease spread (Medical News Today: 20240205)

https://www.medicalnewstoday.com/articles/new-colon-cancer-biomarker-could-slow-disease-spread

Researchers have identified a protein in the immune system, Ku70, that could be used as a biomarker to screen for and treat colon cancer.

Bowel cancer, or colon cancer, is currently the third most common cancer in the world.
Cases of colon cancer in younger adults are on the rise in many areas of the world.
Bowel cancer screenings are important to help detect the disease at its earliest stage.

Researchers have identified a protein in the immune system that could be used as a biomarker during colon cancer screenings and potentially slow progression of the disease.

Bowel cancer — also known as colorectal cancer or colon cancer — is currently the third most common cancerTrusted Source in the world.

Although colorectal cancer is treatableTrusted Source when caught in its earliest stages, only about 35%Trusted Source of all cases are diagnosed at the earliest stage.

Past studies show colon cancer recurrence affects between 30–40% of people treated for this type of cancer.

For this reason, bowel cancer screeningsTrusted Source are important to help detect the cancer at its earliest stage.

Researchers at the Australian National University are helping to provide an additional biomarker for future use in improving outcomes at every stage of disease spread.

This specific protein in the immune system, Ku70, can be manipulated to potentially treat colon cancer. The findings were recently published in the journal Science Advances.

Rates of colon cancer are increasing

Dr. Si Ming Man, group leader and CSL Centenary Fellow in the Division of Immunology and Infectious Disease at the Australian National University and corresponding author of this study explained why it's important for researchers to continue searching for new ways to treat bowel cancer.

"Despite the progress in developing novel therapeutics, bowel cancer is the [third] leading cause of cancer-related deaths worldwide," Dr. Man told Medical News Today.

"Given the high mortality and increasing incidence — especially in the younger populationTrusted Source [adults under 50] — improvements in existing therapies and/or the development of more effective and safer therapeutics are needed for patients with colorectal cancer."

Researchers estimate there were about 1.93 Trusted SourcemillionTrusted Source bowel cancer cases globally in 2020, and that number is expected to hit 3.2 million in 2040.

Cases of colorectal cancer in younger adults are also on the rise in many areas of the world, including the United States, the United Kingdom, Europe, and China.

Targeting a new colon cancer biomarker

When asked why they decided to look for a protein in the immune system as a way to help prevent and even treat colorectal cancer, Dr. Man said scientists have known for a long time that the immune system can pick up and destroy cancer cells.

"Therefore, harnessing and boosting the power of the immune system could be a safe approach to restricting the development of cancer," Dr. Man explained.

"This vision led to the identification of a remarkable immune protein that can guide the therapeutic decisions for patients with colorectal cancer."

For this study, Dr. Man and his team focused on a protein called Ku70Trusted Source.

“Ku70 is an immune protein that functions as a repair worker and fixes any breaks or damage in our instruction manual, called DNA,” Dr. Man explained.

“In this study, we observed that people with bowel cancer carry less Ku70 proteins in their body and are more likely to die from their disease earlier in life, suggesting that the amount of Ku70 could be used as a biomarker in predicting the prognosis of colorectal cancer.

Further, we observed that Ku70 works like a surveillance system that picks up damaged DNA and works with other immune proteins called RasTrusted Source and RafTrusted Source, which are frequently altered in colorectal cancer, to stop healthy cells from turning into cancer cells.”

— Dr. Si Ming Man, corresponding study author

Looking to the future, Dr. Man said that investigations into the precise source and feature of DNA involved in Ku70-mediated activation of Ras and Raf could guide the development of new therapeutics, improving the treatment outcomes for individuals with inflammatory diseases and cancer therapeutics.

“Potential future directions of this study are to test whether Ku70 works in the same way in other cancers,” he added. “ Investigations into activating Ku70 using small-molecule drugs and/or DNA-based therapy are another potential avenue.”

New insights into potential causes of colon cancer

MNT also spoke with Dr. Anton Bilchik, surgical oncologist, chief of medicine, and director of the Gastrointestinal and Hepatobiliary Program at Saint John’s Cancer Institute in Santa Monica, CA, about this study.

Dr. Bilchik said he found the study to be both exciting and provocative because it identifies a specific signaling pathway within a cell which, if suppressed, enhances the progression of cells that can become colon cancer.

“And then the opposite occurs if there is an increase in the particular mutation or expression of these genes,” he added.

“So the relevance of these findings is that it identifies a specific signaling pathway that can potentially be targeted for treatments for colorectal cancer.”

“And we’re seeing an epidemic of young people — young adults under age 50 — with colorectal cancer,” Dr. Bilchik continued.

“So any information that provides insight as to what causes colorectal cancer, and this study simply suggests a particular signal or pathway that may lead to colorectal cancer, as well as inflammatory bowel disease, is extremely important.”

Obesity, alcohol, and smoking linked to colon cancer

As to why bowel cancer rates among young adults are on the rise, Dr. Bilchik said the common global themes are obesityTrusted Source, alcoholTrusted Source, and smokingTrusted Source.

“And what has been noticed is that in certain countries where there is a decline in alcohol use, such as France and Italy, there is stability or even a decline of younger people being diagnosed with colorectal cancer,” he detailed.

“Unlike other countries, such as the U.K. or Northern Europe, where alcohol intake — and I’m talking specifically among younger adults — is on the rise, there is a high incidence of early-onset colorectal cancer versus late onset, meaning after age 50.”

Dr. Bilchik said the next steps for this research should be to define better which particular cells are most relevant.

“Two of the known causes of colorectal cancer relate to the microbiome, which is the bacteria within the body, as well as the immune system. So, more studies show how this impacts the microbiome and the immune microenvironment. And then what would be most interesting is to see what potential drugs may enhance the expression or decrease the expression.”

— Dr. Anton Bilchik, surgical oncologist